नई दिशाएं, नए कदम

पत्थरों को तोड़ा है, पर्वतों को फोड़ा है।
बनाया मकान हमने, ईंट लहू को जोड़ा है।

मौका मिले तो वे क्या नहीं कर सकतीं? इसे साबित कर दिखाया है पुद्दूकोट्टाई (तामिलनाडू) की गरीब, पिछड़े वर्ग और अनुसूचित जाति की महिलाओं ने। 1991 में इन महिलाओं को 170 पत्थर की खदानों का ठेका दिया गया। पहले यह खदानें ठेकेदारों के हाथ में थी और वे यहां मज़दूरी का काम करती थीं। यह क्रांतिकारी कदम उठाया ज़िला महिला कलेक्टर श्रीमती शीला रानी ने।

लगभग 20, कहीं-कहीं कुछ ज़्यादा महिलाओं के समूह बनाए गए। संगठन को पंजीकृत तो कराया गया लेकिन सहकारी समिति नहीं बनाई गईं। सहकारी समिति बनाने का मतलब होता सहकारी विभाग के प्रतिनिधियों को भी सदस्य बनाना और उनके वेतन देना। इससे मुनाफ़ा बिना ज़रूरत उनमें बंटता।

मज़दूर से ठेकेदार बनीं

आज लगभग 4000 महिलाओं का उन खदानों पर पूरा नियंत्रण है जहां वे पहले मज़दूरी करती थीं। इन महिलाओं के पति वहां दिहाड़ी पर मज़दूरी करते हैं। उन्हें भी फायदा हुआ है। ज़्यादा मज़दूरी और नियमित रूप से रोज़गार मिलता है। दिहाड़ी तो उत्पादकता के हिसाब से मिलती है लेकिन फायदा सब सदस्यों में बराबर बराबर बंटता है।

पलानिअम्मा, चिंतामनि, वसंता, कुडिमिया

मलाई गांव के तीन समूहों की नेता हैं। वे समूह का हिसाब-किताब खुद देखती हैं। 'एरीवोली' समूह द्वारा चलाए गए पूर्ण साक्षरता अभियान के तहत वह पढ़ना लिखना सीख चुकी हैं। एक छोटी ट्रेनिंग भी वे ले चुकी हैं। इससे उन्हें अपना सब काम करने में बहुत मदद मिली है। नवसाक्षरों के लिए खासतौर पर निकाला समाचार-पत्र पढ़ कर देश में क्या हो रहा है वे इसकी जानकारी भी हासिल कर लेती हैं।

परिवार की खुशहाली

पहले जहां उन्हें 6 रु. रोज़ मज़दूरी मिलती थी आज 35 रु. रोज़ तक कमा लेती हैं। परिवार को बेहतर खाना, बेहतर कपड़े, शिक्षा व दवादारू के ठीक मौके मिल पाते हैं। चिंतामनि अपना घर खरीदने जा रही हैं। पलानिअम्मा व वसंता पहले ही घर खरीद चुकी हैं। रुपए-पैसे पर महिलाओं के नियंत्रण से रुपया शराब व जुए में नहीं खर्च होता है। महिलाओं की ग़रीबी के खिलाफ़ लड़ाई कहीं ज़्यादा सफल रही है।

सरकार को भी इससे कम मुनाफ़ा नहीं हुआ है। पहले ठेकेदार कम आमदनी दिखाकर बहुत कम मुनाफ़ा सरकार को देते थे। कभी-कभी तो सरकार को सालाना कर के रूप में सिर्फ 525 रु. मिले। उसके मुकाबिले 1992 में सरकार को 25 लाख रु. मिले। 1993 में यह रकम 48 लाख तक पहुंचेगी जिसमें 38 लाख तो महिला समूहों द्वारा संचालित खदानों से मिलेगा।

अड़चनें

महिलाओं का काम आसान नहीं रहा है। पुराने ठेकेदार, राजनेता, भृष्ट सरकारी कर्मचारी सब उनके पीछे हाथ धोकर पड़े रहते हैं। शुरू में तो ठेकेदार उनकी ट्रक व गाड़ियां आने जाने नहीं देते थे। कई बार तो उन्होंने रास्ते की सड़कें तोड़-फोड़ डालीं। माल की बिक्री में भी अपनी भरसक रुकावट डालते रहते हैं। ठेका हर साल के साल मिलता है। पुराने ठेकेदार सरकार पर बराबर दबाव डालते रहते हैं कि महिलाओं को ठेका न दिया जाए। लेकिन सरकारी मुनाफ़े के आंकड़े ही महिलाओं की मजबूती है।

साभार : टाइम्स आफ़ इंडिया